विषयानुक्रमणिका

तुलसीदास और श्रीनारायणगुरु की कविता में दर्शन और भक्ति

तुलनात्मक अध्ययन

पृष्ठ संख्या

अध्याय : एक
तुलसीदास और श्रीनारायणगुरु के व्यक्तित्व और कृतित्व 1-27

अ.। तुलसीदास

पृष्ठभूमि - राजनैतिक , सामाजिक , सांस्कृतिक , धार्मिक स्थिति , व्यक्तित्वस्वरूप , पारिवारिक वातावरण , बचपन , अनाथावस्था , गुरुमुख से रामकथा श्रवण , भगवान राम से सुरक्षा और अभय की प्राप्ति , गृहस्थ जीवन , गृह त्याग , पर्यटन , काशीवास , कुछ मित्र , काव्यरचना का प्रारंभ , तुलसी ने किसी विशेष संप्रदाय की स्थापना नहीं की, अंतिम दिन, महाप्रस्थान ।

अ. §2§ कवि व्यक्तित्व , कृतियों का संक्षिप्त परिचय

आ. श्रीनारायणगुरु

पृष्ठभूमि - राजनैतिक , सामाजिक , सांस्कृतिक , धार्मिक स्थिति , व्यक्तित्वस्वरूप , पारिवारिक वातावरण , बचपन, गुरुत्व का बीजांकुर , संस्कृत में उच्च शिक्षा , विवाह , गृहत्याग , अवधूत वृत्ति , गुरुत्वपूर्ण विकास की ओर , स्वधर्म निर्वहण का प्रारंभ , अरुविप्पुरम में शिवमूर्ति का प्रतिष्ठापन और उस का सन्देश , गुरु के नेतृत्व में केरल के प्रथम सामाजिक संगठन का आविर्भाव , वर्कला-गुरु का विश्राम स्थान , गुरु और महाकवि रवीन्द्रनाथ-ठाकुर , गुरु ने कोई नया धर्म स्थापित नहीं किया, वैक्कम सत्याग्रह , गुरु और महात्मा गाँधी , सन्यासी संघ की स्थापना , महासमाधि ।

आ. §1§ कवि व्यक्तित्व, कृतियों का संक्षिप्त परिचय, तुलनात्मक निष्कर्ष

पृ. सं.

अध्याय : दो — १२८-२८८

तुलसीदास और श्रीनारायण गुरु के दार्शनिक विचार

दर्शन की परिभाषा, भारतीय दर्शन-एक अवलोकन, वेद, उपनिषद, भगवद्गीता, षड्दर्शन, अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, शैवसिद्धांत , जैन-बौद्ध दर्शन

(अ). तुलसीदास का दर्शन

ब्रह्म विचार, जीव विचार, माया विचार, जगत् विचार, इन्द्रियों और मन संबन्धी विचार, कर्म विचार, ज्ञान विचार, योग विचार, मुक्ति-विचार ।

(आ). श्रीनारायणगुरु का दर्शन

ब्रह्म विचार, जीव विचार, माया विचार, जगत् विचार, इन्द्रियों और मन संबंधी विचार, कर्म विचार, ज्ञान विचार, योग विचार, मुक्ति विचार।

(इ). तुलसीदास और श्रीनारायण गुरु के दार्शनिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन

निष्कर्ष ।

अध्याय : तीन — २८९-४२०

तुलसीदास और श्रीनारायणगुरु के भक्ति विचार

भक्ति की परिभाषा, भक्ति के भेद

भारत में भक्ति की परंपरा , वैष्णव धर्म की पृष्ठभूमि और इतिहास, भक्ति आन्दोलन ।

§अ§. तुलसी की भक्ति कल्पना

तुलसी का राम-परब्रह्म प्रतीक – विष्णु का अवतार, ब्रह्मस्वरूप राम शील, शक्ति और सौन्दर्य का प्रतिरूप, तुलसी की भक्ति भावना, भक्ति निरूपण, भक्ति के साधन ।

§आ§. श्रीनारायणगुरु की भक्ति कल्पना

दक्षिण में भक्ति का आविर्भाव और प्रचार, शैव धर्म की पृष्ठभूमि और-इतिहास, तमिष़ की शैव भक्ति परंपरा, श्रीनारायणगुरु पर तमिष़ के – शैव सिद्धों का प्रभाव, शिव, देवी, कुमारकार्तिकेय, वासुदेव, विष्णु आदि देवता ब्रह्म प्रतीक हैं, गुरु के भक्ति संबन्धी विचार, गुरु से भक्ति को दी गयी परिभाषा, दर्शनमाला का भक्तिदर्शन, भक्ति के साधन ।

§इ§. तुलसीदास और श्रीनारायणगुरु के भक्ति संबन्धी विचारों का-तुलनात्मक अध्ययन

निष्कर्ष ।

अध्याय : चार

H21-H72

तुलसीदास और श्रीनारायण गुरु के सामाजिक दर्शन

सामाजिक जीवन से संबन्धित भारतीय आदर्श

§अ§. तुलसीदास का सामाजिक दर्शन

तुलसीदास के नीति विषयक विचार, अमर जीवनमूल्यों का प्रतिनिधित्व करनेवाले पात्रों के द्वारा रामचरितमानस में आदर्श मानवता का चित्रण, भ्रातृ भावना और परहित कामना समाज हित के साधन, व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में गुरुत्व का स्थान, मानस में चित्रित पारिवारिक जीवन एवं रामराज्य की कल्पना संसार के लिये अनुकरणीय है ।

पृ. सं.

§आ§. श्रीनारायण गुरु का सामाजिक दर्शन

श्रीनारायण गुरु ने अद्वैत दर्शन को व्यावहारिक रूप दिया, गुरु के नीति-विषयक विचार, गुरु ने भारतीय नीति-शास्त्र का पुनर्मूल्याङ्कन किया, वैज्ञानिक ढंग से जाति का निराकरण , "जाति-लक्षणम्", आत्मोपदेशशतकम् का नीति निरूपण , आत्मसुख केलिये किये जानेवाले कर्म से दूसरे का भी हित हो, अनुकंपादशकम्, प्यार का नवाक्षरी मंत्र, धर्म पर गुरु के विचार, "एक-जाति, एक धर्म, एक ईश्वर"--गुरु का मुख्य उपदेश, आदर्श मानव समाज की सृष्टि में आश्रम और गुरु का स्थान, सामाजिक अभ्युदय केलिये गुरुकल्पना का पुनःप्रतिष्ठापन आवश्यक ।

§इ§. तुलसीदास और श्रीनारायण गुरु के सामाजिक दर्शनों का तुलनात्मक अध्ययन

निष्कर्ष ।

अध्याय: पाँच 473-53

तुलसीदास और श्रीनारायण गुरु की समन्वय साधना

§अ§. तुलसीदास की समन्वय-साधना

साकार-निराकार, शैव-वैष्णव- शाक्त, द्वैत-अद्वैत, कर्म-ज्ञान-भक्ति, वर्णाश्रम धर्म-मानवता वाद, स्वसुख-परसुख, आध्यात्मिकता-लौकिकता, राजा-प्रजा, तत्व-व्यवहार जैसे क्षेत्रों में तुलसीदास से साधित समन्वय का संक्षिप्त विवेचन ।

§आ§. श्रीनारायण गुरु की समन्वय-साधना

साकार-निराकार, शैव-वैष्णव-शाक्त, द्वैत-अद्वैत, कर्म-ज्ञान-भक्ति, वेदान्त-सिद्धान्त, जाति व्यवस्था-मानवतावाद, आत्मसुख-अपरसुख , आध्यात्मिकता-भौतिकता, आधुनिकता- प्राचीनता- तत्व-व्यवहार आदि के क्षेत्रों में श्रीनारायण गुरु से साधित समन्वय का संक्षिप्त विवेचन ।

§इ§. तुलसीदास और श्रीनारायण गुरु की समन्वय साधनाओं का तुलनात्मक अध्ययन

निष्कर्ष ।

पृ. सं.

अध्याय : छह — 534-593

मूल्यांकन

सहायक ग्रन्थों की सूची

❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖